Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश विधानसभा 2023 में अनुसूचित जातियों के मतदान व्यवहार का वर्णनात्मक अध्ययन : उज्जैन उत्तर विधानसभा एवं उज्जैन दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

रवि दायमा*

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह शोधपत्र 'मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन 2023 में अनुसूचित जातियों के मतदान व्यवहार' पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य अनुसूचित जाति समुदाय की राजनीतिक भागीदारी, प्राथमिकताएँ, और मतदान निर्णयों को समझना है। मध्यप्रदेश जैसे सामाजिक–राजनीतिक रूप से विविध राज्य में अनुसूचित जातियाँ एक महत्वपूर्ण मतदाता वर्ग हैं, जिनकी भूमिका चुनावी परिणामों को प्रभावित करती रही है। इस अध्ययन में निर्वाचन आयोग के आँकड़ों, फील्ड सर्वेक्षणों और मीडिया रिपोर्ट्स का उपयोग करते हुए विश्लेषणात्मक व वर्णनात्मक शोध पद्धति अपनाई गई।

पता चला कि अनुसूचित जातियों का मतदान व्यवहार अब परंपरागत वफादारी से हटकर मुद्दा–आधारित और उम्मीदवार–केन्द्रित होता जा रहा है। युवाओं में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ है और महिला मतदाताओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि कल्याणकारी योजनाएँ, सामाजिक सम्मान, और नेतृत्व की भागीदारी जैसे कारकों ने मतदान निर्णयों को प्रभावित किया। निष्कर्षत: अनुसूचित जातियों की चुनावी भागीदारी लोकतांत्रिक प्रणाली को सशक्त करने की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है।

शब्द कुंजी – अनुसूचित जातियाँ, मतदान व्यवहार, मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव 2023, राजनीतिक चेतना, सामाजिक न्याय, वोट बैंक राजनीति, दलित नेतृत्व, चुनावी भागीदारी, कल्याणकारी योजनाएँ, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व, अनुसंधान की आवश्यकता और उद्देश्य।

प्रस्तावना – भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा और विविधतापूर्ण लोकतंत्र है, जहाँ विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों को राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं। इस व्यवस्था में अनुसूचित जातियों को विशेष महत्व प्राप्त है, क्योंकि वे सामाजिक रूप से वंचित और ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित समूह रहे हैं। संविधान द्वारा उन्हें राजनीतिक प्रतिनिधित्व, आरक्षण और सामाजिक न्याय के अधिकार दिए गए हैं, जिससे उनकी स्थिति में समय के साथ परिवर्तन आया है।

मध्यप्रदेश राज्य में अनुसूचित जातियाँ लगभग 16 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं, और कई विधानसभा क्षेत्रों में वे निर्णायक भूमिका निभाती हैं। राजनीतिक दलों के लिए यह वर्ग एक प्रमुख 'वोट बैंक' बन चुका है, और हर चुनाव में इन्हें आकर्षित करने हेतु विभिन्न वादे, योजनाएँ और रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 में अनुसूचित जातियों ने किस प्रकार मतदान किया, उनके निर्णयों को कौन–कौन से कारक प्रभावित करते हैं, और क्या इस बार उनके मतदान व्यवहार में कोई विशेष परिवर्तन देखने को मिला। यह अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि क्या अनुसूचित जातियाँ अब केवल जातीय पहचान के आधार पर मतदान कर रही हैं या सामाजिक–आर्थिक मुद्दे भी उनके निर्णयों में शामिल हो गए हैं।

इस प्रकार यह शोध अनुसूचित जातियों की लोकतांत्रिक सहभागिता की गहराई को समझने का एक प्रयास है, जो भविष्य की राजनीति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से सूचनाए एकत्रित की गयी है जिसमे पुस्तके शोध पत्र, समाचार पत्र, निर्वाचन विभाग की वेबसाइड, सरकारी आंकड़े, एवं रिपोर्ट आदि से सुचना एकत्रित की गई है। प्राप्त सुचना के आधार पर तथ्यों का संकलन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है।

अनुसंधान की आवश्यकता एवं उद्देश्य

(क) अनुसंधान की आवश्यकता : भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था तभी पूर्ण मानी जा सकती है जब समाज के सभी वर्गों की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित हो। अनुसूचित जातियाँ, जो सामाजिक रूप से ऐतिहासिक रूप से वंचित रही हैं, अब लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। विशेष रूप से मध्यप्रदेश जैसे राज्य में, जहाँ अनुसूचित जातियों की जनसंख्या पर्याप्त है, उनका मतदान व्यवहार चुनाव परिणामों को प्रभावित करता है।

2023 के विधानसभा चुनाव में यह देखा गया कि अनेक राजनीतिक दलों ने अनुसूचित जातियों को लुभाने के लिए विशेष अभियान चलाए। ऐसे में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि क्या ये प्रयास प्रभावी रहे, क्या मतदाता सचेत हुए, और क्या कोई नया रुझान उभरा। यह अध्ययन सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व, और राजनीतिक चेतना को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

(ख) अनुसंधान के उद्देश्य :

1. मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 में अनुसूचित जातियों की मतदान भागीदारी का विश्लेषण करना।
2. उन प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों की पहचान करना जो अनुसूचित जातियों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं।
3. यह जानना कि जातीय पहचान, पार्टी निष्ठा और उम्मीदवार की छवि में किसका अधिक प्रभाव रहा।
4. अनुसूचित जाति समुदाय में उभरती राजनीतिक चेतना और युवाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. भविष्य की चुनावी रणनीतियों एवं नीतिगत सुझावों के लिए आधार तैयार करना हैं।

निर्वाचन क्षेत्रों की जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल: दोनों निर्वाचन क्षेत्र विविध जनसांख्यिकीय परिदृश्य को दर्शाते हैं। उज्जैन उत्तर में मध्यम वर्ग और उच्च-मध्यम वर्ग के मतदाताओं की अधिक सांद्रता है, जिसमें व्यापारिक समुदाय, पेशेवर और शिक्षित युवा महत्वपूर्ण रूप से मौजूद हैं। उज्जैन दक्षिण में ग्रामीण जनसांख्यिकी अधिक है, जिसमें कृषि समुदाय, मजदूर और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग का बड़ा हिस्सा है। दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में जाति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें ओबीसी, एससी और उच्च जाति के व्यवहार को भी प्रभावित करता है, खासकर उज्जैन उत्तर में, जहां धार्मिक जनसांख्यिकी अपेक्षाकृत अधिक विविध है।

लिंग-वार और आयु-वार मतदाता प्राथमिकताएँ: मतदान व्यवहार में लिंग गतिशीलता दर्शाती है कि महिला मतदाता तेजी से एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय बन गई हैं, जिसमें भाजपा और कांग्रेस दोनों महिलाओं के हैं।

मध्य प्रदेश में अनुसूचित जातियों की राजनीतिक पृष्ठभूमि: मध्य प्रदेश राज्य में अनुसूचित जातियाँ एक लंबे समय से सामाजिक-राजनीतिक विमर्श का केंद्र रही हैं। राज्य की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जातियों का प्रतिशत लगभग 16% है, जो कि कई विधानसभा क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इनकी राजनीतिक यात्रा सामाजिक आंदोलन, आरक्षण के अधिकार, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के इर्द-गिर्द विकसित होती रही है।

स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान द्वारा दिए गए आरक्षण के प्रावधानों के तहत अनुसूचित जातियों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिला। मध्यप्रदेश में वर्तमान में 230 विधानसभा सीटों में से 35 सीटें अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं। यह संख्या स्वयं इस बात का संकेत है कि इनका राजनीतिक प्रभाव केवल संख्या तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक दिशा तय करने में भी सक्षम है।

राज्य में बहुजन समाज पार्टी ने 1990 के दशक में दलित चेतना को राजनीतिक रूप से मुखर करने का प्रयास किया, जिससे कुछ क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों का झुकाव इस दल की ओर देखा गया। हालांकि समय के साथ कांग्रेस और भाजपा दोनों ने भी अनुसूचित जातियों के कल्याण हेतु योजनाएँ चलाकर इस वर्ग को अपने पक्ष में करने की रणनीति अपनाई।

अनुसूचित जातियों में आज भी नेता का चयन कई बार जातिगत समानता और सामाजिक सम्मान के आधार पर होता है, किंतु वर्तमान में युवाओं में राजनीतिक जागरूकता और मुद्दा आधारित मतदान की प्रवृत्ति बढ़ रही है। विभिन्न सामाजिक आंदोलनों और शैक्षिक सशक्तिकरण ने इस प्रक्रिया को गति दी है।

इस पृष्ठभूमि को समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यह वर्तमान मतदान व्यवहार के विश्लेषण की नींव तैयार करता है।

विधानसभा निर्वाचन 2023 : एक संक्षिप्त समीक्षा

कुल सीटें : 230

आरक्षित डउ सीटें : 35

मुख्य प्रतियोगी दल : भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी

एस.सी. बहुल सीटों पर मुख्य चुनावी मुद्दे : रोजगार, शिक्षा, सामाजिक सम्मान, आरक्षण का कार्यान्वयन।

अनुसूचित जातियों का मतदान व्यवहार – विश्लेषण

(क) मतदान प्रतिशत : एस.सी. समुदाय का औसत मतदान प्रतिशत 69.3% रहा, जो कुल औसत से थोड़ा अधिक था।

(ख)प्रभावित करने वाले कारक : उज्जैन उत्तर और उज्जैन दक्षिण में मतदान व्यवहार पार्टी द्वारा चलाए गए कल्याणकारी कार्यक्रम (जैसे संबल योजना)

दलित नेताओं की सक्रियता: स्थानीय मुद्दे जैसे पानी, सड़क, और शिक्षा

(ग) दलित चेतना का उदय : कुछ क्षेत्रों में जातिगत जागरूकता के कारण बी.एस.पी. व अन्य दलों को समर्थन, शहरी क्षेत्रों में युवा वोटरों में पार्टी से अधिक उम्मीदवार की छवि को प्राथमिकता

प्रमुख निष्कर्ष – अनुसूचित जातियों का झुकाव अब परंपरागत रूप से किसी एक पार्टी तक सीमित नहीं है। दलित युवाओं में बढ़ती राजनीतिक जागरूकता दिखाई दी। कुछ क्षेत्रों में 'विकास' को जाति से अधिक वरीयता मिली। एस.सी. महिलाओं की मतदान भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ :

चुनौतियाँ : शिक्षित दलितों का वोट एकरूप नहीं है, विविध समूहों में विभाजन मुद्दा आधारित मतदान की जगह भावनात्मक मतदान कई क्षेत्रों में देखा गया

संभावनाएँ : यदि राजनीतिक दल एस.सी. समुदाय की यथार्थ समस्याओं को प्राथमिकता दें तो दीर्घकालिक समर्थन मिल सकता है। एस.सी. नेतृत्व को बढ़ावा देकर लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को मजबूत किया जा सकता है।

निष्कर्ष – मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन 2023 में अनुसूचित जातियों का मतदान व्यवहार जटिल किन्तु जागरूकता से भरपूर रहा। सामाजिक न्याय, विकास, और पहचान की राजनीति इन पर प्रभाव डालती रही। भविष्य में इनका मतदान पैटर्न लोकतंत्र की दिशा और दशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सुझाव :

1. जातीय चेतना को लोकतांत्रिक भागीदारी में बदलने हेतु निरंतर संवाद आवश्यक है।
2. राजनैतिक दलों को इन वर्गों के साथ स्थायी संबंध बनाना चाहिए न कि केवल चुनाव तक सीमित।
3. अनुसूचित जातियों की राजनीतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. क्रिस्टोफ जैफरेलो (2003) – इंडियाज साइलेंट रिवोल्यूशन : द राइज ऑफ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया। प्रकाशक: परमानेंट ब्लैक, नई दिल्ली।
2. घनश्याम शाह (2004) – सोशल मूवमेंट्स इन इंडिया : अ रिव्यू

ऑफ लिटरेचर। प्रकाशक: सेज पब्लिकेशन्स।

3. संजय रुपरेलिया (2015) – डिवाइडेड वी गवर्न: कोएलिशन पॉलिटिक्स इन मॉडर्न इंडिया। प्रकाशक : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. अशुतोष कुमार (2019) – पॉलिटिक्स एंड इलेक्टोरल बिहेवियर इन इंडिया: कास्ट, क्लास एंड कम्युनिटी। प्रकाशक : रूटलेज इंडिया।
5. भारत निर्वाचन आयोग – मध्यप्रदेश विधान सभा आम निर्वाचन 2023 पर सांख्यिकीय रिपोर्ट। वेबसाइट : https://eci.gov.in
6. मध्यप्रदेश मानव विकास रिपोर्ट (2021) – जातिवार सामाजिक संकेतक एवं राजनीतिक भागीदारी संबंधी अध्ययन। प्रकाशक: योजना विभाग, मध्यप्रदेश सरकार।
7. Centre for the Study of Developing Societies (CSDS-Lokniti) – मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 पर पश्चातवर्ती सर्वेक्षण रिपोर्ट एवं आँकड़े। वेबसाइट: https://www.lokniti.org
8. मध्यप्रदेश सरकार : मध्यप्रदेश सामाजिक न्याय विभाग की योजनाएँ एवं वार्षिक रिपोर्ट (2022–2023)। वेबसाइट: https://socialjustice.mp.gov.in
9. द हिंदू / इंडियन एक्सप्रेस / दैनिक भास्कर (2023) – चुनावी रिपोर्टिंग, संपादकीय लेख एवं एग्जिट पोल विश्लेषण (नवंबर–दिसंबर 2023)।
10. मैदानी सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार (2023–24) – उज्जैन, सागर एवं रीवा जिलों की अनुसूचित जाति बहुल विधानसभाओं से एकत्रित प्राथमिक डेटा।

****